रिंगाल बनेगा आजीविका का आधार

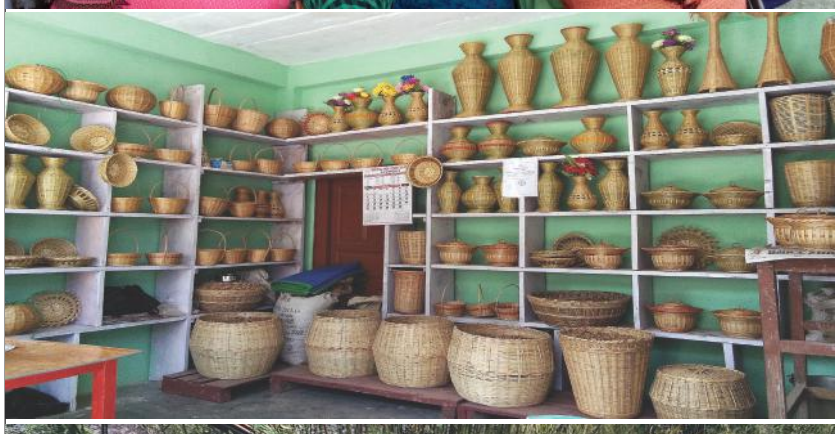

पलायन और आर्थिक पिछड़ेपन के शिकार पर्वतीय गांवों की आजीविका का बड़ा आधार बन सकता है रिंगाल। मुवानी, कनालीछीना , रामगंगा घाटी क्षेत्र पिथौरागढ़ उत्तराखण्ड की सामाजिक संस्था उत्तरापथ सेवा संस्था ने राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन की एक परियोजना के तहत इस कार्य को सिद्ध कर दिखाया है। ज्ञातव्य है कि रिंगाल हस्तकला आजीविका सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों की आजीविका का प्रमुख साधन माना जाता रहा हैं। उत्तराखण्ड की पहाड़ियों में पाए जाने वाला बांस प्रजाति के इस पौधे का उपयोग परम्परागत रूप से घरेलू एवं कृषि उपयोगी वस्तुएं बनाने में किया जाता रहा है। इससे बने उत्पाद अधिक टिकाऊ होने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में सहायक हैं साथ ही घातक प्लास्टिक के विकल्प भी माने जाते हैं। तकनीकी कौशल की कमी, कच्चे माल की कमी तथा प्रचार-प्रसार के साथ-साथ विपणन आदि की समस्या ने इसे उपेक्षित कर दिया।

उत्तरापथ सेवा संस्था ने अपने विभिन्न प्रयासों के माध्यम से हस्तशिल्प कारीगरों का एक कैडर विकसित किया । ग्राम स्तरीय पर किये गये सर्वेक्षण के आधार पर यह संस्था इस निष्कर्ष पर पहुंची कि स्थानीय कारीगरों को अच्छा प्रशिक्षण देकर इस कला को नए दौर के बाजार की मांग के अनुसार उभारा जा सकता है और यह ग्रामीण आजीविका का बड़ा माध्यम बन सकता है। उत्तरापथ सेवा संस्था पिथौरागढ़ पिछले 06 वर्षों से समुदाय के साथ रिंगाल हस्तशिल्प कला पर विभिन्न प्रकार के प्रयोग करती आ रही थी। संस्था द्वारा इस प्रकार के हस्तशिल्पियों को एक मंच पर लाकर न केवल इन कारीगरों की रूचि बढ़ाई वरन उन्हें नए प्रकार के प्रशिक्षण से भी जोड़ा।

सीनीय हस्तशिल्प से जुड़े ग्रामीणों को प्रशिक्षण में डस्टबिन, हॉटकेश, फूट बास्केट, सर्विस टोकरी, ट्रे, घड़ी आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया, दूसरे चरण में बेहतर मूल्य प्राप्त हेतु उत्पादों की सफाई एवं फिनिशिंग आदि की कला और तीसरे चरण में रेशा (रामबांस, भीमल, भांग) हस्तशिल्प की जानकारी दी गयी। आज यह ग्रामीणों की आय का प्रमुख साधन बन रहा है। स्थानीय महिला स्वयं सहायता समूह सदस्यों जो कि सुगन्ध उत्तरापथ किसान स्वायत्त सहकारिता (कृषक उत्पादक संघ) की सदस्य है को भी प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोड़ा गया।

रिंगाल आदि के कच्चे माल की उपलब्धता बनाने के लिए टाटा ट्रस्ट मुंबई के सहयोग से संस्था ने कुछ साल पूर्व ही एक कार्यक्रम चलाकर 2500 से अधिक रिंगाल पौधों का रोपण कर इस समस्या का समाधान कर लिया था। वर्ष 2019 में राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन की ओर से इस कार्य को प्रोत्साहित करते हुए संस्था द्वारा पिथौरागढ़, बेरीनाग व मुनस्यारी क्षेत्रों में इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए परियोजना स्वीकृत की गई। लघु अनुदान की इस परियोजना के तहत विकासखण्ड मुनस्यारी के जैती ग्राम पंचायत में 50 से अधिक महिला हस्तशिल्पियों को विभिन्न चरणों में नए रूप में प्रशिक्षण दिया गाय। दक्ष महिलाओं ने गत वर्ष 6000 से अधिक डिजाइनर राखियाँ बनाकर बाजार में उतारी जिसे लोगों ने खूब सराहा। अब महिलाएं रिंगाल के आभूषण, विभिन्न घरेलू उपयोगी , सजावटी उत्पाद भी तैयार कर रही है।

संस्था द्वारा जमीनी कार्य करते हुए रिंगाल हस्तकला की संभावनाओं वाले गांवों का गहन अध्ययन कर सभी हस्तशिल्पियों की पहचान की गयी । हस्तशिल्पि का विवरण, उनकी भूमि की उपलब्धता, कच्चे माल की उपलब्धता तथा रिंगाल हस्तकला की संभावनाओं पर अध्ययन किया गया। साथ ही इस कौशल के प्रचार-प्रसार हेतु ग्राम स्तरीय बैठकें कर इसे व्यापक रूप देने में सफलता अर्जित की है। संस्था अब तक पूर्व प्रयासों से 122 से अधिक हस्तशिल्पियों को सघन प्रशिक्षण देकर दक्ष बना चुकी है। बड़ी संख्या में महिलाएं अब सर्विस टोकरी, फूलदान, पेन स्टैण्ड, घड़ी, पूजा टोकरी, आदि उत्पाद बनाने में दक्ष है। वर्तमान समय में संस्था के साथ 35 से अधिक हस्तशिल्पकार 53 प्रकार के उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं। जिसमें मुख्य प्रशिक्षक राजेश लाल, किशन राम मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। परियोजना के तहत नियमित शोध अनुसंधान कर रिंगाल उत्पादों में गुणात्मक बदलाव लाने हेतु स्थानीय स्तर पर उपलब्ध चीड़ के स्यूतों, बीजों, फाइबर का प्रयोग उत्पाद की सुन्दरता को बढ़ाने के लिए किया जाने लगा है। इन उत्पादों के विपणन एवं प्रचार प्रसार की व्यवस्था- राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के सहयोग से गठित कृषक उत्पादक संघ के द्वारा विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किये गए। जिनमें प्रमुख रूप से आजीविका परियोजना पिथौरागढ़-बागेश्वर, जलागम विकास परियोजना, जिला प्रशासन तथा मुंबई ओर हैदराबाद स्थित व्यापारी आदि प्रमुख है। सुगन्ध उत्तरापथ किसान स्वायत्त सहकारिता संघ (कृषक उत्पादक संघ) का रिंगाल हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री से प्रतिवर्ष 5 से 7 लाख आय अर्जित कर रहे हैं। अपने विभिन्न प्रयासों से आज वे अपने उत्पादों को दक्षिण अफ्रीका तक पहुंच चुके हैं। संस्था द्वारा रिंगाल उत्पदों के प्रचार प्रसार हेतु राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर आयोजित होने वाले विभिन्न मेलों एवं प्रदर्शनियों में प्रतिभाग किया जा रहा है। हस्तशिल्पियों के इस प्रयासों के स्थानीय विभागों का भी प्रोत्साहन मिलने लगा है। जिस कारण सभी प्रकार के स्थानीय व राज्य स्तर पर मेलों व अन्य आयोजनों में आज इन उत्पादों को प्राथमिकता से देखा जा सकता है। स्थानीय कार्यालयों, गणमान्य लोगों को पुरस्कार देने से लेकर पर्यटकों द्वारा खरीदे जाने वाले उत्पादों में ये हस्तशिल्प उत्पाद आज बिक रहे हैं। विलुप्ती की कगार पर खड़े रिंगाल हस्तशिल्प व्यवसाय को इन प्रयासों से लगातार बल मिला रहा है और पर्वतीय गांवों में रोजगार और आजीविका का यह एक बड़ा माध्यम बनने लगा है। प्लास्टिक उत्पादों के विकल्प बनकर ये उत्पाद पर्यावरण संरक्षण में भी सहयोग दे रहे हैं। लगातार अपने कार्यों से ख्याति अर्जित करने वाले संस्था के मास्टर ट्रेनरों को भी जिला स्तरीय पुरुस्कार के साथ 12 जनवरी 2020 को उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत द्वारा 1 लाख का चैक व प्रमाण पत्र व सुगन्ध उत्तरापथ किसान स्वायत्त सहकारिता को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

रिंगाल (बांस से तैयार उत्पाद)

- पूजा टोकरी विभिन्न डिजाइन वाली
- सर्विस टोकरी हैंडिल वाली
- सर्विस टोकरी
- सब्जी टोकरी बड़ीफल टोकरी
- रिंगाल टोकरी
- मयूरी टोकरी
- छापरा टोकरी
- हैंगिंग टोकरी
- हॉटकश छोटा
- घोसला
- घण्टी लैम्प
- बाउल लैम्प
- कौनिकल लैम्प
- हैंगिंग लैम्पलैम्प सैट डिजाईन
- लैम्प सैट डिजाईन के विभिन्न डिजाइन
- लैम्प सैट डिजाईन लैम्प सैट डिजाईन
- रेशा लैम्प
- पेन स्टैण्ड बिनाई
- पेन स्टैण्ड जालीदार
- पेन स्टैण्ड रेशा
- गागरी गुलदस्ता
- गुलदस्ता
- डस्टबिन सामान्य
- हथकण्डी डिजाईन हथकण्डी रेशा
- झूमर
- घड़ी
- टी ट्री
- फाईल बॉक्स
- केदारनाथ मन्दिर मॉडल

रिंगाल उत्पादों की बढ़ती मांग को देखते हुए हस्तशिल्पियों की संख्या में वृद्धि कर रोजगार केअवसर प्रदान कर उनकी आजीविका में वृद्धि की जा रही है। रिंगाल का उत्पादन, रिंगाल उत्पादों का निर्माण व विपणन करनेके उद्देश्य से उत्पादों में वैल्यू ऐड करने के लिए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध फाइबर, भीमल, भांग व रामबांस के रेशे का उपयोग कियाजारहाहै। परम्परागत उत्पादों की पहचान को बनाए रखतेहुए क्रेता की मांग के आधार पर नए आकर्षक उत्पाद बनाए जा रहेहै। ये प्लास्टिक का विकल्प होने के साथ ही इकोफ्रेंडली व पर्यावरण संवर्धक भी है। राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर रिंगाल हस्तशिल्प कला विकसित कर इसे राज्य की पहचान बनाने के प्रयास जारी हैं।

राजेंद्र पंत, परियोजना प्रमुख

हिमालयी राज्यों में प्राकृतिक संसाधनों के सतत् प्रबंधन और कौशल एवं क्षमता विकास की दिशा में राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन अंतर्गत संचालित परियोजनाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों में से यह एक सफल प्रयास है। कोरोना संकट काल में हिमालयी राज्यों में रोजगार के विकल्प तैयार करने की दिशा में भी यह एक सकारात्मक कदम है। यह प्रयास व्यापक रूप लेगा और पर्वतीय राज्य को हस्तशिल्प के क्षेत्र में नई पहचान देगा।

इं0 किरीटकुमार,
नोडल अधिकारी रा0हि0अ0मिशन